www.thearyasamaj.org

वर्ष-११ अंक-४ २७ दिसम्बर २०१३

ओ३म्

मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का प्रमुख पत्र

वैदिक रवि

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥

www.thearyasamaj.org

अथेश्वरस्तुतिप्रार्थनोपासना:

१. ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद् भद्रं तन्न आ सुव ।।

(यजु. ३०।३)

२. ओ३म हिरण्यगर्भ: समवर्त्तताग्रे भूतस्य जात: पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

(यजु. २५।१०)

३. ओ३म् य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवा:।
यस्यछायाऽमृतं यस्य मृत्यु: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. २५ ।१३)

४. ओ३म् य: प्राणतो निमिषतो महित्वैकऽ इद्राजा जगतो बभूव ।
य ईशेऽ अस्य द्विपदश्चतुष्पद: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३५ ।१२)

५. ओ३म् येन द्यौरूग्रा पृथिवी च दृढा येन स्व स्तभितं येन नाक: ।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमान: कस्मै देवाय हविषा विधेम ।।

(यजु. ३२ ।६)

६. ओ३म् प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम् ।।

(ऋ सं. १० ।सं. १२१ मं. १०)

७. ओ३म् स नो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा ।
यत्र देवा अमृतमानशानास्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ।

(यजु. ३२।१०)

८. ओ३म् अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भुयिष्ठान्ते नमऽउक्तिम् विधेम ।।

(यजु. ४० ।१६)

www.thearyasamaj.org

ओ३म्
वैदिक-रवि
मासिक

वर्ष-११ अंक-४

२७ दिसम्बर २०१३
(सार्वदेशिक धर्मार्थ सभा के निर्णयानुसार)
सृष्टि सम्वत् १९७,२९,४६,११३
विक्रम संवत् २०६९
दयानन्दाब्द १८४

सलाहकार मण्डल
राजेन्द्र व्यास
पं.रामलाल शास्त्री 'विद्या भास्कर'
डॉ. रामलाल प्रजापति
वरिष्ठ पत्रकार

प्रधान सम्पादक
श्री इन्द्रप्रकाश गांधी
कार्या.फोन: ०७५५ ४२२०५४९

सम्पादक
प्रकाश आर्य
फोन: ०७३२४२२६५६६

सह-सपादक
मुकेश कुमार यादव
फोन: ९८२६१८३०९५

सदस्यता
एक प्रति- २०-०० रू.
वार्षिक-२००-०० रू.
आजीवन-१०००-०० रू.

विज्ञापन की दरें

आवरण पृष्ठ २ एवं ३	५०० रू.
पूर्ण पृष्ठ (अंदर)	-४००रू
आधा पृष्ठ (अंदर का)	२५० रू.
चौथाई पृष्ठ	१५० रु

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ
१.	संपादकीय	२
२.	गाय सवोत्तम क्यो	३
३.	ज्ञान विज्ञान की खोज भारतीय विज्ञान	४
४.	आपकी हंसी	५
५.	क्यों है आदमी परेशान	७
६.	जरा सोंचे संभले और करे	९
७.	आर्य श्रेष्ठ कहालाऐं	१०
८.	क्षमा	११
९.	उपासना किसकी	१३
१०.	अभिमान से दूरी	१५
११.	स्वामी दयानंद	१६
१२.	ईश्वर	१७
13.	जिन्दगी	२१
14.	दक्षिण अफ्रिका में आर्य सम्मेलन सम्प.	२३
15.	उज्जैन-भोपाल संभाग में वेद प्रसार	२४

जनवरी 2014 के त्यौहार व जयंतियाँ
1. ईस्वी सन्, नववर्ष
12. राष्ट्रीय युवा दिवस, स्वामी विवेकानन्द जयंती
14. मकर संक्रान्ति
15. थल सेना दिवस
23. सुभाषचंद्र बोष जयंती
25. भीष्म पितामह जयंती
26. गणतंत्र दिवस
28. लाला लाजपत राय जयंती
30. महात्मागांधी पुण्य जयंती

**पत्रिका में प्रकाशित विचार,सामग्री से सपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
किसी भी विवाद के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।**

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीय –

स्वाध्याय से दूरी, जिन्दगी अधूरी

मनुष्य की उन्नति का आधार ज्ञान है, ज्ञान का स्त्रोत पूर्व संस्कार, स्वाध्याय, सत्संग है। स्वाध्याय आत्मा का भोजन है, वह पौष्टिक भोजन जो आत्मा से अज्ञान रूपी अन्धेरे को दूर कर ज्ञान रूपी प्रकाश प्रदान करता है, तथा आत्मा को बल प्रदान करता है। आत्मिक बल पुरूषार्थ के प्रति उत्साह वृद्धि करता है, यही पूर्ण पुरूषार्थ, सफलता के निकट ले जाता है।

सद्ग्रंथों का आर्षग्रंथों का स्वाध्याय जीवन जीने की राह बताता है उस पथ पर चलकर सफल जीवन जिया जा सकता है। मानवीय जीवन अनेक बिन्दुओं का घटनाक्रमों, उत्थान–पतन के मार्ग से संबंध रखता है। जीवन में अनेक प्रकार की जटिलताएं सुख–दुःख के पड़ाव आते जाते है। कहीं गम कहीं खुशी इन दोनों स्थितियों में सामंजस्य बनाए रखना, विपरीत परिस्थितियों में भी परेशान न होना यह किसी स्वाध्यायशील व्यक्ति के लिए ही संभव है। किन्तु स्वाध्याय सत्य शास्त्रों का होना चाहिए, ये शास्त्र प्रत्येक समस्या का निदान बता देते हैं। शास्त्रों में सर्वोत्तम तो परमात्मा की दिव्य वाणी वेद ही है। इसके अतिरिक्त हमारे विद्वान पूर्वजों, ऋषियों का गहन चिन्तन, साधना से उत्पन्न ज्ञान जो वेदानुकूल है, वह जीवन में अमृत तुल्य है। आचार्य चाणक्य कहते हैं –

अनेक संशयोच्छेदि परोक्षार्थ दर्शकम्।
सर्वस्व नेत्रं शास्त्रं नास्त्यन्ध एव स।।

अर्थात् – शास्त्र अनेक संशयो को दूर कर देते हैं जो प्रत्यक्ष रूप से हम नहीं सोच पाते उसका ज्ञान भी शास्त्र करा देते हैं। इसलिए मनुष्य के चक्षु शास्त्र ही हैं। जो इनसे दूर हैं वह तो अन्धा है।

इस प्रकार स्वाध्याय का महत्व मानवीय जीवन में बताया गया है।

वेद की सूक्ति भी कहती है –

स्वाध्याय प्रवचनाभ्यां न प्रमदितव्यम्।

तैतरीय 30 शिक्षा वल्ली

स्वाध्याय और वेद प्रचार में कभी प्रमाद मत करो।

जब तक समाज स्वाध्याय से जुड़ा रहा तब तक सब व्यवस्थित रहा। जीवन बाहरी वस्तुओं से भौतिक उपलब्धियों से ही पूर्ण नहीं होता, सुविचारों, से ही जीवन अलंकृत होता है और सुविचार स्वाध्याय से हमें प्राप्त होते हैं। आज सद्ग्रंथों को पढ़ने–पढ़ाने का किसी के पास समय नहीं है, विज्ञान के युग में इसके महत्व को समाज अनदेखा करके चल रहा है।

www.thearyasamaj.org

विलासिता और मनोरंजन के साधनों से घिरा व्यक्ति अपना समय उनके लिए ही देना अधिक महत्वपूर्ण मान रहा है। इसका भावी परिणाम क्या होगा ? व्यक्तिगत, पारीवारिक, सामाजिक जीवन शैली पर क्या प्रभाव हो रहा है ? इसकी चिन्ता नहीं है।

बैंक बैलेंस, प्रापर्टी और स्टेटस बढ़ाने में मानवीय जीवन मूल्यों की तेजी से क्षति हो रही है। जीवन कागजी फूल जैसा बनता जा रहा है, रिश्तों में मिठास व आत्मीयता का स्थान औपचारिकताओं ने ले लिया है। विश्वास और सत्याचरण जैसे मानवीय अलंकार लुप्त होते जा रहे हैं। मानवता पशुता के समकक्ष स्वार्थ, शोषण और भौतिकता के सिद्धान्तों को ग्रहण कर रही है। इन सबका कारण है सत्यज्ञान के स्त्रोत स्वाध्याय से दूरी।

मानवता के महत्व आर सर्वोच्च स्थान के उन गुणों का त्याग मानवता की सार्थकता को बुरी तरह प्रभावित कर रही है। ये पंक्तियां बड़ी उपयुक्त होगी **"कहने को तो हम, आदमी नाम से मशहूर हैं।**
पर हकीकत में, आदमियत से बहुत दूर हैं।।

स्वाध्याय ही जीवन रूपी डोर को संभालती है। संसार के तमाम उन देशों को दख सकते हैं जहां सुख, साधन, सम्पत्ति की कमी नहीं है किन्तु वहां सबसे ज्यादा आत्म हत्यायें हो रही हैं। क्यों ? एकमात्र कारण है स्वाध्याय के अभाव में केवल भौतिकता प्रधान जीवन। ऐसा जीवन पूर्ण नहीं होता। इसलिए जहां हो स्वाध्याय से दूरी, वहां जिन्दगी रहे अधूरी।

गाय सर्वोत्तम क्यों !

1. गौमूत्र उत्तम औषधि है। आयुर्वेद के ग्रंथों में पचास से भी अधिक रोगों में इसका उपयोग किया जाता है।

2. कृषि के कार्यों के लिए गाय के बछड़े सर्वोत्तम हैं। भारतवर्ष में आज के मशीनीयुग में भी 96 प्रतिशत खेती बैलों से होती है।

3. गाय एक सहनशील पशु है। वह कड़ी धूप व सर्दी को भी सहन कर लेती है। इसीलिए गाय जंगल में घूमकर प्रसन्न होती है।

4. गाय के दूध में सूरज की किरणों से भी निरोगता बढ़ती है। इसीलिए वह अधिक स्वास्थ्यप्रद है।

5. गाय की अपेक्षा भैंस के बच्चे/भैंसा धूप में कार्य करने में सक्षम नहीं होते।

6. गाय की अपेक्षा भैंस के घी में कण अधिक होते हैं। जो कि सुपाच्य नहीं होते।

www.thearyasamaj.org

हमारे गौरव

ज्ञान विज्ञान की खोज और भारतीय विद्वान

महर्षि कणाद – परमात्मा, विश्व का निर्माण और संचालन की प्रक्रिया के विषयों में हमारे देश में अनादि काल से चिन्तन होता रहा है। इस चिन्तन द्वारा महर्षियों को अनुभूति हुई, उसे ही दर्शन का नाम दिया गया है। भारतीय वैदिक घर्शन के छः अंग है, न्याय, मीमासा, वैशेषिक, सांख्य, योग और वेदान्त। उनमें वैशेषिक दर्शन के प्रवर्तक महर्षि कणाद थे।

वायु पुराण के अनुसार महर्षि कणाद द्वारका के समीप प्रभासपाटन में जन्में थे और सोमशर्मा के शिष्य थे। आपका सच्चा नाम ऊलूकमुनि था ऐसा माना जामा है। आप कश्यप गौत्र के थे। विद्वानों के अनुसार महर्षि कणाद का समयीसा से 400 वर्ष पूर्व का माना जाता है। यद्यपि कुछ विद्वान आपको बुद्ध के पूर्व हुए मानते हैं। आप खेत में गिरे हुए अन्न के कण–कण के भी सदुपयोगकर्ता होने से आप "कणाद" कहे गए।

आपका वैशेषिक सूत्र ही वैशेषिक दर्शन का मूल ग्रन्थ है। प्रशस्तपाद ने उसके ऊपर "पदार्थ धर्म संग्रह" नामक भाष्य लिखा था। वैशेषिक दर्शन का आधार परमाणुवाद है। किसी झरोखे की जाली में से आने वाले धूप के सूर्य किरणों में उपड़ते हुए दिखने वाले सूक्ष्मकण का संठवां भाग परमाणु कहलाता है। यह परमाणु नित्य है। अपनी विशेषता के कारण प्रत्येक पदार्थ में उसका भिन्न–भिन्न अस्तित्व होता है। इन विशेषताओं का विवेचन करने के कारण इस दर्शन को वैशेषिक दर्शन कहा गया।

वैशेषिक दर्शन के अनुसार विश्व सात पदार्थों में विभक्त है – द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय और अभाव। महर्षि कणाद के मत में विश्व का निर्माण नौ द्रव्यों से हुआ है। पृथ्वी, जल, तेल, वायु, आकाश, काल, दिशा, मन और आत्मा। इस ब्रह्माण्ड में 24 गुण हैं – रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श, सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, संख्या, परिणाम, पृथकत्व, संयोग, विभाग, परत्व, अपरत्व, द्रवत्व, बुद्धि, स्नेह, संस्कार, धर्म और अधर्म। कर्म के पॉच प्रकार हैं – उत्क्षेपण, अवक्षेपण, आकुंचन, प्रसरण और गमन। अनेक वस्तुओं में समानता के आधार से उत्पन्न एकत्व बुद्धि के आश्रय को सामान्य कहते हैं, जैसे कि मनुष्यत्व।

इस ग्रन्थ में कणाद ऋषि ने धर्म का लक्षण इस प्रकार दर्शाया है– यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः स धर्मः। अर्थात् जिसमें अभ्युदय (इस लोक के सुख व समृद्धि) तथा निःश्रेयस (परमार्थिक – मोक्ष) दोनों की सिद्धि प्राप्त की जाए वह धर्म है।

www.thearyasamaj.org

स्वास्थ्य के लिए अनमोल नुक्सा
आपकी हंसी

प्रसन्नता से वह शक्ति आती है, जो मानसिक क्रिया में परिणत हो जाती है, और अंग–प्रत्यंग की क्रिया के लिए आवश्यक है। मानसिक प्रवाह शरीर के भीतरी संस्थानों पर पूरा प्रभाव डालते हैं। मन प्रसन्न है तो श्वास–संस्थान, पाचन–संस्थान, रक्त–संस्थान, मूत्र–संस्थान आदि प्रसन्नता से कार्य करते हैं। प्रसन्नता के द्वारा शरीर में जीवनी स्फूर्ति का अविर्भाव होता है। मानसिक रोगों के अस्पताल "बटलर" के सुपरिटेन्डेन्ट ने अपनी रिपोर्ट में कहा है – "मानसिक स्वास्थ्य के लिए जी भरकर हंसना अत्यधिक हितकर है। तर्क करने की बजाय पागलपन के रोगियों से हंसकर बात कीजिये तो आप उनका जल्दी–जल्दी इलाज कर सकते हैं।

दुःख, चिन्ता या भय, ये मनुष्य–जीवन के बहुत बड़े शत्रु हैं। एक मुर्दनी से भरा, चिड़चिड़ा मनहूस चेहरे वाला व्यक्ति अपने जीवन की पवित्रता का विश्वास ,खो देता है। उसे अपनी शक्तियों पर भरोसा नहीं रहता। वह जीवन के आदर्श तक को भूलकर झगड़ालू, घमण्डी, निरूद्देश्य, गतिहीन एवं निरर्थक हो जाता है। हमें इस प्रकार के सभी दुष्प्रभावों के विरूद्ध संघर्ष करना चाहिए, जो मन को हीन बनाने का प्रयत्न करते हों। हमें इनका उतना ही विरोध करना चाहिये, जितना कि हम मन में आई हुई अपराध की भावना का करते हैं। यह बिल्कुल सत्य है कि जवानी का समय बढ़ाने की शक्ति विकसित करने की मूल प्रेरणा हमारे मन में ही है। दृढ़ मन में ही ऐसी शक्ति है, जिससे जीवन को सुरक्षित रखा जा सके।

कुछ दिन हुए, मैंने एक व्यक्ति के बारे में पढ़ा था। वह पास के ही किसी एक नगर में रहता था। उसे मृत्यु के निकट समझ लिया गया था और उसके सम्बन्धियों को बुला भेजा गया। वे आये और उसके बिस्तर के पास खड़े हो गये। उन्हीं सम्बन्धियों में उस आदमी का एक पुराना परिचित व्यक्ति भी आया और उसने उस मृतवत् पुरूष को पुकारकर कहा – मेरी ओर देखो ! जब उसने उसकी ओर देखा तो वह हंसते हुए बोला – तुम बिल्कुल ठीक हो, तुम्हें हुआ क्या है ? तुम जल्दी ही स्वस्थ हो जाओगे। उस आगन्तुक ने इस ढ़ंग से बातचीत की कि उस मृतवत् व्यक्ति को भी बरबस हंसी आ गई। उसके हंसने से उसके भीतरी संस्थान जागृत हो उठे और वह कुछ ही दिनों में फिर से स्वस्थ हो गया।

वह शेक्सपीयर ही था जिसने कहा था कि **"प्रसन्नचित्त लोग चिरकाल तक जीते हैं।"**

www.thearyasamaj.org

सान्फ्रान्सस्को के किसी पत्र में एक समाचार छपा था कि मिलपाइंट की अपच, अनिद्रा और इसी प्रकार की अन्य बीमारियों की शिकार एक दुःखी महिला ने दृढ़ निश्चय किया कि वह अपने दुःख–शोक और चिन्ता के भावों को छोड़ देगी, क्योंकि उनसे उसका जीवन शोचनीय बन गया है। उसने यह भी नियम बनाया कि वह दिन भर में कम से कम तीन बार अवश्य हंसेगी। चाहे हंसने का अभ्यास भी किया। तनिक–से–कारण पर ही वह हंस पड़ती। चाहे हंसने का कारण हो या न हो, पर वह हंसेगी अवश्य। उसने जी भरकर हंसने का अभ्यास भी किया। तनिक से कारण पर ही वह हंस पड़ती। वह अपने कमरे में जाकर एकान्त में अकेली ही प्रसन्न होती। इससे शीघ्र ही उसका स्वास्थ्य अति उत्तम हो गया, उसका घर आनन्द और प्रसन्नता से चमचमाने लगा।

पत्रिका में उपर्युक्त महिला का वृत्तान्त लिखने वाले का कहना था पहले–पहल तो उसका पति उसके बच्चे भी उसका बड़ा ध्यान रखते थे और उसका सम्मान करते थे, इसलिए उन्होंने इस महिला के इस नियम में किसी प्रकार की बाधा न पहुंचाई। परन्तु कुछ ही दिनों बाद उस महिला का पति भी हंसने में उसका साथ देने लगा। जितनी बार वह हंसती, उतनी बार वह भी हंसता। फिर तो वह जिस समय घर आता तो आते ही पूछता – तुम नियम के अनुसार हंसी थी ? और यह प्रश्न पूंछते हुए वह स्वयं भी हंसता था और पत्नी जब उसका उत्तर देती तब वह फिर हंसता था। उस महिला के बच्चे उस समय बहुत छोटे थे। वे मॉ के उस व्यवहार को विचित्र समझते थे। धीरे–धीरे उन बच्चों ने अपने दूसरे साथियों को यह बात बताई और उन बच्चों ने अपने अपने माता–पिता से कही। उक्त महिला के पति ने भी अपने मित्रों को यह बात बताई। उनमें से जब भी कोई उस महिला से मिलता तो यही प्रश्न पूछता – आज तुम कितनी बार हंसी थी ? यह स्वाभाविक था कि वे जब प्रश्न पूछते थे, तब हंसते थे और उस महिला को भी इससे हंसी आ जाती थी। हंसी ने उसे दुःख के गढ़े से बाहर निकाल लिया। उस महिला को अपच रहती थी, परन्तु हंसने का स्वभाव बन जाने के बाद अपच का कहीं पता भी न रहा। सिर दर्द, जो उसे प्रतिदिन होता था, छः वर्ष तक न हुआ। उस महिला का सारा संसार ही बदल गया। उसे अपने काम में कई गुना आनन्द आने लगा। उसे अपना पति भी बदलते हुए स्वभाव का लगने लगा। उसके बच्चे हंसने वाले बच्चों के नाम से प्रसिद्ध हो गये। इस प्रकार उसके हंसने के नियम ने आश्चर्ययुक्त प्रभाव दिखलाए।

क्रमशः ....

www.thearyasamaj.org

क्यों हैं आदमी परेशान!

सुबह से रात्री तक हम अनेक व्यक्तियों से मिलते है, और उससे भी बहुत अधिक संख्या में उन्हें देखते हैं। इस भीड़ में बहुत कम ऐसे मिलेगें जिनके चेहरो पर प्रसन्नता दिखाई दे। अन्यथा प्रायः तनाव, चिन्ता, क्रोध, परेशानी, यही सब चेहरों पर देखने को मिलती है।

ये परेशानियां जीवन का सुख चैन छीन लेती है जीवन उबाऊ हो जाता है वक्त कटते नहीं कटता है कुछ के लिए तो यह अभिशाप भी बन जाती है। परन्तु यह तो जीवन को जीने का सही तरीका नहीं है। क्योंकि जिस जीवन में सुख, शान्ति, उमंग, उत्साह होता है वही अच्छा जीवन कहलाता है।

परेशानी के कारणों में मुख्यतः हमने जीवन के भौतिक मापदण्डों को चुना, अपने लिए इनका अभाव पैसा, परिवार, पद, प्रतिष्ठा, स्वास्थ आदि को माना। इन्ही अभाव को दुःख व परेशानियों का कारण मान दुःख, परेशानी की जड़ समझ रहे हैं। किन्तु ऐसा नहीं है, जिनके पास बहुत धन, सम्पत्ती है जिनके अपने अरबों के व्यापार हैं वे भी दुःखी है, चिन्ताओं से घिरे है, अनिन्द्रा, शकर, हृदय की बिमारियों के प्रकोप से नारकीय जीवन जी रहे हैं, उनके सामने भी पारीवारिक समस्याएं हैं, धन सुरक्षा का भय है, शासकीय विभागों का चक्कर है इस प्रकार न जाने कितनी समस्याओं ने जीवन को बुरी तरह प्रभावित कर रखा है। इसलिए धन दुःखों को हटा देगा, यह सोच ठीक नहीं अपितु अपार असंतुलित धन, अनुचित तरीकों से कमाया धन और परेशानियाँ बढ़ाता है। हमारे मानसिक विचार, सुख–दुःख के आधार हैं।

जिनके परिवार में अच्छी खासी संख्या है भाई बन्धु, पुत्र, पौत्र से भरापुरा परिवार है वे भी दुःखी हैं। जिनके पास प्रतिष्ठा हैं, पद है, वे भी दुःखी है। जिनका अच्छा स्वास्थ है, बिमारियों से दूर है वे भी परेशान नजर आते हैं। इसलिए इस परेशानी का अन्त मात्र धन, सम्पत्ति पद, पुत्र, पौत्र, परिवार में बसा है यह मानना युक्ति संगत नहीं है।

समझ लेना चाहिए इन परेशानियों का कारण केवल भौतिक अभाव नहीं है तो फिर वे क्या कारण है यह जानना जरूरी है। वैसे तो जिन कारणों से व्यक्ति परेशान रहता है उनकी कोई सीमा नहीं है। किन्तु यह निश्चित मानिए यहां उल्लेखित उन कुछ प्रमुख बातों को अपनाकर भी जीवन की परेशानियों को बहुत कुछ कम कर सकते हैं। आईए कुछ बातों पर विचार करते है।

दिल ही बदौलत रंज भी है,
दिल ही की बदौलत राहत भी।
दुनिया जिसे कहते हैं,
वह जन्नत भी है दोजख भी।।

www.thearyasamaj.org

अधिकांश परेशानियों की जड़ हमारे अपने विचार हैं। ये हमारे विचार ही हमारे कार्यों को गति प्रदान करते हैं। विचारों के अनुसार कार्यों को करना या किसी कारणवश चाहते हुए भी न कर पाना एवं करने के पश्चात भी पर्याप्त वांछित परिणाम न प्राप्त होना परेशानियों को जन्म देता है। इसलिए विचार वही करना चाहिए जो हमारी योग्यता, क्षमता, समय, स्थिति के अनुसार हों। आचार्य यास्काचार्य ने मनुष्य को विचारशील होने का सन्देश देते हुए कहा –

"ये मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति ते मनुष्याः" अर्थात् मनुष्य वे ही जो प्रत्येक कार्य को विचार करके करते हैं। यहां विचार से तात्पर्य यथायोग्य होना चाहिए, उचित होना चाहिए, अपनी क्षमता, योग्यता समयानुकूल होना चाहिए।

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक, अर्थशास्त्री आचार्य चाणक्य ने परेशानियों से बचने का अमृततुल्य सूत्र हमें दिया। इसे ध्यान देकर समझें तो अनेक परेशानियों का कारण हमें इसमें मिल जावेगा। श्लोक इस प्रकार है :–

कः कालः कानि मित्राणि,
को देशः को व्ययागमौ।
कश्चाहं का च में शक्ति,
ऋतु ध्यायन मुहुर मुहुर।।

लोक में पहली बात है कः कालः – समय कौन–सा है, किस व्यक्ति को कौन सा कार्य कब करना, कब किसमें चिन्तन करना इसका ज्ञान नहीं होता, वही परेशान व दुःखी होता है। समय के महत्व, सीमा व मर्यादा को ध्यान में रखकर विचार करना, कार्य करना दुःख परेशानियों को दूर करता है।

कुछ व्यक्ति वर्तमान में नहीं जीते, उनकी सबसे बड़ी समस्या यह होती है कि जो कल बीत गया और जो कल आने वाला है उसको वे वर्तमान से अधिक महत्व देते हैं।

कल जो बीत गया उसमें जो होना था वह हो चुका, उसके परिणाम को अब हम बदल नहीं सकते, जो नुकसान हो गया उसकी भरपाई नहीं हो सकती, हमारे साथ जो दुर्घटना हो चुकी, जिसका फल हमें भोगना था वह भोग चुके। इन सबको केवल याद करके घटनाओं को ताजा बनाते हैं। इनके अतीत में इतने डूब जाते हैं और इस कारण कि वर्तमान का ध्यान ही नहीं रहता। बीते हुए कल के प्रभाव में जो वर्तमान हमारे हाथ में है उसको नजर अन्दाज करके इसमें जो खुशियाँ ला सकते थे, उसके स्थान पर बीते हुए कल के परिणामों से ही चिन्तित रहते हैं।

www.thearyasamaj.org

इसी प्रकार जो कल आने वाला है उसके प्रति ही आशान्वित रहना, असुरक्षा भाव से उसी ओर पूरा ध्यान देकर उसके बारे में अनुमान की दुनियां में खोकर हम वर्तमान की उपेक्षा करते हैं। इससे वर्तमान की उपलब्धियों को छोड़कर जो प्राप्त है, उसे छोड़कर, आगे आने वाला है जिसकी अभी निश्चितता नहीं है उसे बहुत अधिक महत्व देना भी परेशानियों का कारण है।

इसका यह अर्थ कदापि नहीं कि हम अतीत और भविष्य को बिलकुल अनदेखा कर दे। अतीत सीखने के लिए व भविष्य जीवन योजना के लिए जरूरी है किन्तु हमारे हाथ में जो हैं उसका महत्व कम करके और जो अब हमारे पास नहीं रहा या जो अभी आया नहीं है उसकी चिन्ता या खयाली पुलावों में उलझकर उसे विशेष महत्व देना परेशानियों का कारण है। इसलिए वर्तमान को संभालो, भविष्य स्वतः संभलेगा।

– प्रकाश आर्य, महू

जरा सोचें, संभले और करें।

इतने नरम मत बनो कि लोग तुम्हें खा जायें।
इतने गरम मत बनो कि लोग तुम्हें छू भी न सकें।

इतने सरल मत बनो कि लोग तुम्हें मूर्ख बना दें।
इतने जटिल मत बनो कि लोग तुम्हें मिल न सकें।।

इतने गम्भीर मत बनो कि लोग तुमसे ऊब जायें।
इतने छिछले मत बनो कि लोग तुम्हें माने ही नहीं।।

इतने महंगे मत बनो कि लोग तुम्हें बुला न सके।
इतने सस्ते भी मत बनो कि लोग तुम्हें नचाते रहें।।

आपके एक पल का क्रोध आपका भविष्य बिगाड़ सकता है।
आपके एक पल का सत्संग भविष्य बना सकता है।।

सत्य

सच बोलने का सबसे बड़ा फायदा ह, उसे याद नहीं रखना पड़ता।

संकलन – स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती

www.thearyasamaj.org

आर्य श्रेष्ठ कहलाऐं

(आर्य समाज के नियम)

सर्वसत्य विद्या, पदार्थ जो उससे जाने जाते।
आदिमूल उन सबका, पावन परमेश्वर कहलाते।।
वह सत्‌चित आनन्द स्वरूप हैं, निराकार सर्वेश्वर।
अभय, नित्य, शुचि, सर्वाधार, अज, अनन्त, करूणाकार।।
निर्विकार, सर्वान्तर्यामी, न्यायी, सृष्टि सृजेता।
करें भक्ति हम उसकी, वह प्रभु व्यापक सबमें रहता।।
सर्व सत्य विद्याओं का है पुस्तक "वेद" हमारा।
पाठन–पठन, सुनना–सुनाना, श्रुति, शुचि धर्म हमारा।।
सदा सत्य को अपनाने में, अरू असत्य त्यागने में।
रहें, बनाऐं रूचि, तत्परता अपने अन्तस मन में।।
करें सभी कर्तव्य कर्म सब सत्य धर्म अनुसारी।
सभी दृष्टि से सत्यासत को सम्यक, विशद विचारी।।
सब विधि से उपकार जगत का करना लक्ष्य बनाऐं।
स्वात्म, शारीरिक अरू सामाजिक उन्नति कर सुख पाऐं।।
यथायोग्य प्रीति से सबसे वर्ते धर्मानुसारी।
करें सत्य विद्या की वृद्धि, मिटा अविद्या सारी।।
सबकी उन्नति में ही हम, अपनी उन्नति लख पाऐं।
केवल, अपनी ही उन्नति से, हम न तुष्ट हो जाऐं।।
रह परतन्त्र निभाएं सामाजिक नियम, सर्वहितकारी।
निज हितकारी नियम निभाऐं, हो स्वतन्त्र, सुविचारी।।
ताकि सर्वहितकर कार्यों में गति अवरोध न आऐं।
इन दस नियमों का पालन कर, आर्य श्रेष्ठ कहलाऐं।।

– **दयाशंकर गोयल**
1554 डी, सुदामानगर, इन्दौर

www.thearyasamaj.org

बोधकथा –

क्षमा

स्वामी दयानन्द जब विद्या समाप्त कर चुके तो गुरू दक्षिणा में लौंग लेकर स्वामी विरजानन्द के पास उपस्थित हुए।

गुरूजी बोले – मैं तुमसे लौंगों से बढ़कर गुरू दक्षिणा की आशा करता हूँ।

स्वामी दयानन्द ने हाथ जोड़ दिए – आज्ञा कीजिए, गुरूदेव।

गुरूजी–तुम संसार से झूठ और पाखण्ड का नाश करके सत्य और वेद का प्रचार करो।

स्वामी दयानन्द ने यही गुरू दक्षिणा चुकाते हुए अपना सारा जीवन बलिदान कर दिया। उन्होंने कई मत मतान्तर वालों से शास्त्रार्थ करके असत्य को हराया। साधारण जनों को आदेश देकर सत्य का प्रचार किया और अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वे राजा–महाराजाओं को सुधारकर भारत की राजनीति को एक स्वस्थ मोड देने में लग गये। इसी उद्देश्य से वे जोधपुर नरेश के पास भी आए। स्वामीजी की विद्वत्ता और ब्रह्मचर्य से प्रभावित होकर जोधपुर नरेश उनके शिष्य और भक्त बन गये।

एक दिन स्वामी जी ने देखा कि नरेश के पास एक वेश्या बैठी है। स्वामीजी ने नरेश को तुरन्त फटकार दिया – अरे सिंहों का कुतिया के साथ क्या संबंध है ?

बस, इस वाक्य ने नरेश की सोई हुई आत्मा को जगा दिया। उसने उसी क्षण वेश्याओं को तिलांजलि दे दी। नरेश का जीवन तो सुधर गया किन्तु वेश्या ने अपना माया जाल उखड़ता देखकर स्वामीजी से भरपूर बदला लेने का निश्चय किया।

वह स्वामी जी के रसोईये के पास पहुंची और उसके सामने रूपयों की ढ़ेरी लगा दी। रसोईयें की आँखें चमकने लगी और उसने अपनी प्रसन्नता की बाढ़ को रोकते हुए पूछा – इतने रूपए किस लिये ?

यह तुम्हारा पुरस्कार है, वेश्या ने कहा – बोलो, स्वीकार है तुम्हें ?

भला रूपए देखकर किसका दिल नहीं पिघलता ? रसोईये के मुंह से भी निकला, स्वीकार क्यों नहीं, पर मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ ? बस, एक छोटा सा काम। कहते–कहते वेश्या ने बारीक पिसे हुए कॉच की एक पुड़िया रसोईये के हाथ में दे दी और कहा – यह कॉच कल अपने स्वामी के भोजन में मिलाकर उसे खिला देना।

www.thearyasamaj.org

यह सुनकर एक बार तो रसोईया कॉप गया, किन्तु वेश्या ने उसे और धन देकर कहा – तुम्हें रूपये कम लगते हैं तो लो, और लो, काम हो जाने पर अलग पुरस्कार दूँगीं।

रूपयों का जादू काम कर गया। रसोईये ने उसी दिन स्वामीजी को भोजन में कॉच का तीखा विष खिला दिया। स्वामीजी को पहले भी दो बार विष दिया जा चुका था। किन्तु वे योगी थे, उन्होंने दोनों बार अपनी यौगिक क्रियाओं द्वारा अपनी ऑत को धो लिया था। किन्तु कॉच का विष नस–नस में धस गया, वह जहॉ पहुंचा नाड़ियॉ फूल गई या फट गई। स्वामीजी के सारे शरीर में विषैले फोड़ों और फफोले निकल आए, जिनसे रह–रहकर रक्त रिसता था, किन्तु क्या मजाल मुंह से एकबार भी हाय निकली हो, इसके बदले ओम और ईश्वर से दो शब्द उनकी वाणी पर थे।

उधर स्वामीजी मृत्युशैया पर पड़े थे, इधर रसोईया पकड़ लिया गया और लोग उसे स्वामीजी के पास हथकड़ियों में ले आए। स्वामीजी ने लोगो को कहा – इसकी हथकड़ियॉ खोलकर इसे मेरे पास छोड़ जाओं। आदेश का पालन हुआ। सब चले गए तो स्वामीजी ने अपने रसोईये से कहा– जगन्नाथ तुम्हें रूपयों की आवश्यकता है न, ये लो रूपये। यह कहकर स्वामीजी ने रूपयों की एक थैली उसकी और बढ़ा दी।

अब तक जगन्नाथ अपने आप को संभाले हुए था, किन्तु स्वामीजी का यह व्यवहार देखकर अपने होंश स्थिर नहीं रख सका। उसका धीरज टूट गया और फूट–फूट कर रोते हुए वह यह कहने लगा – महाराज, मैंने बड़ा पाप किया है, जो एक दुष्टा की बातों में आकर आप जैसे पवित्र सन्त को घातक विष खिला दिया है। क्षमा कीजिए स्वामीजी।

"मैं तुम्हें हृदय से क्षमा करता हूँ और ईश्वर से प्राथना करता हूं कि आज तुम्हारे मन में जो मानवता जागृत हुई हैं वह तुम्हें उन्नति की ओर ले जाए। स्वामीजी ने कहा।

जगन्नाथ रो पड़ा, स्वामीजी मैं इन रूपयों को लेकर क्या करूंगा ? मुझे तो दण्ड दीजिये।

स्वामीजी ने कहा – जगन्नाथ, अब रोने का समय नहीं है, तनिक भी देर मत करो और यहॉ से भागकर अपने प्राणों की रक्षा करो। ये रूपये मार्ग में तुम्हारे काम आएंगें। इस प्रकार एक योगीराज ने अपने हत्यारे को भी क्षमा कर दिया, ऐसा सन्त भला और कौन होगा ?

स्वामीजी की क्षमा का जगन्नाथ पर अद्‌भुत प्रभाव पड़ा। उसके हृदय का पाप इस प्रकार धुलकर साफ हो गया जिस प्रकार गंगा के जल में स्नान करने से शरीर का मैल दूर हो जाता है। उसने अपना शेष जीवन पाप का प्रायश्चित करने और जप, तप करने में व्यतीत कर दिया। ऐसे दया के सागर दयानन्द ने अपने हत्यारे को भी क्षमा कर दिया।

www.thearyasamaj.org

उपासना किसकी ?

प्रेष्ठं वो अतिथिँ्स्तुषे मित्रमिव प्रियम्।
अग्ने रथ न वेद्यम्।। (सामवेद–5)

अर्थ – हे मनुष्यों तुम मित्र के समान हित साधक, अतिप्रिय, निरन्तर रहने वाला हृदय में जो ध्याने योग्य है, जो रथ के समान सबको गन्तव्य तक पहुंचाने वाला एवं स्वयं के प्रकाश से जो प्रकाशित है उसी परमात्मा की स्तुति करो।

मन्त्र में बताया जिसकी स्तुति करना चाहिए, वह जिस प्रकार का हो वह सबका आधार हो, सदैव रहने वाला हो, स्वप्रकाश स्वरूप हो वही हृदय में ध्यान करने योग्य है। ऐसे परमपिता परमात्मा की स्तुति करके ही परम आनन्द को प्राप्त किया जा सकता है। परमात्मा सत्‌चित् आनन्द अर्थात् सच्चिदानन्द उसके सम्पर्क में आकर ही सच्चे आनन्द की अनुभूति एवं राग, द्वेष भय से निवृत्ति संभव है।

परमात्मा का स्थान अन्य कोई नहीं ले सकता, वह परमात्मा सब प्राणियों में विद्यमान है।

परमात्मा की और सुन्दर व्याख्या ऋषि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के नियमों एवं उद्‌देश्यों में बहुत सुन्दर की है जो इस प्रकार है–

"ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है।"

इस प्रकार परमात्मा के स्वरूप का चित्रण ऋषि ने वेदादि सत्य शास्त्रों के आधार पर प्रस्तुत किया है।

परमात्मा की उपरोक्त व्याख्या एवं गुण, कर्म, स्वभाव से हटकर यदि हम अनित्य, नाशवान जड़ पदार्थों या मनुष्यों को परमात्मा मानकर ध्यान करेगें तो वह वास्तव में परमात्मा की स्तुति नहीं है अपितु परमात्मा के द्वारा प्रदत्त वस्तु या मनुष्य की स्तुति है। इस प्रकार हम परमात्मा की नहीं परमात्मा की वस्तुओं की स्तुति कर रहे हैं एवं भयवश उसे ही ईश्वर भक्ति समझ रहे हैं। जबकि हमारी श्रद्धा और विश्वास के धर्म ग्रंथ जिनका हमें अनुसरण करना ही

www.thearyasamaj.org

श्रेयष्कर है वे कहते हैं – **"य एक इत् तमुष्टुहि"** अर्थात् वह परमात्मा एक है उसी की भक्ति करनी चाहिए। पुनः उल्लेखित है। **"एक एव नमस्यो वीक्षवीड्यः"** अर्थात् एक परमेश्वर ही पूजा के योग्य है।

अन्धन्तमः प्रविशन्ति येऽसम्भूतिमुपासते।

ततो भूय इव ते तमो य उ सम्भूत्याऽरताः।। यजु. 40/9

पाषाण और वृक्षादि अवयव और मनुष्य आदि के शरीर की उपासना जो ब्रह्म के स्थान में करते हैं वे अज्ञानी उस अन्धकार से भी अधिक अन्धकार अर्थात् चिरकाल घोर दुःखरूप नरक में गिर के महाक्लेश भोगते हैं।

आगे तो वेद ने बहुत स्पष्ट कर ज्ञान का मार्ग दिखाया जो उस पर ब्रह्म (जो निराकार, सर्वव्यापक, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है।) हम उसके स्थान पर अन्य की या जड़ की प्रकृति की उपासना करते हैं वे अन्धकार में प्रवेश करते हैं।

आज हमने ईश्वर जो सर्वव्यापक है उसको सीमित कर उसका स्थान निश्चित कर दिया। उसे ढूँढ़ने जगह–जगह घूम रहे हैं। शायद इन्हीं परिस्थितियों में भगवान कृष्ण को कहना पड़ा –

नासतो विद्यते भावो,

ना भावो विद्यते सतः।

अर्थात् : जो जहां नहीं है उसे वहां मानना और जो जहां है उसको न होने का विचार करना दोनों ही भूल है। इसलिए हम केवल उस परब्रह्म की ही स्तुति करें, उसी की शरण में हमें शान्ति मिलेगी। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को उपदेश देते हुए कहा **"तमेव शरणं गच्छ सर्वभावेन भारतः भाव"** हे अर्जुन तू सम्पूर्ण भाव से उस परमात्मा की शरण में जा।

आगे पुनः भगवान कृष्ण ने उपदेश दिया–**ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन् मामनु स्मरन्।** हे अर्जुन तू उस ब्रह्म ओ3म् का ही स्मरण कर।

जपूजी साहिब ने दर्शाया – **एक ओंकार सतिनामु** –

करता पुरखु निरभउ निरवैऊ।

अकाल मूर्ति अजूनी सैभ्य गुर प्रसादि।।

अर्थात् – वह ईश्वर ओ3म् एक है अद्वितिय है, सृष्टि का रचियता है भयव बैर से रहित है नित्य है, जन्म मरण से मुक्त है, उसकी उपासना करो।

www.thearyasamaj.org

ओमित्ये दक्षमुद्गीथा मुपासीत् "छान्दोग्य"

ओउम् जिसका नाम है और जो कभी नष्ट नहीं होता है उसकी उपासना करनी योग्य है अन्य को नहीं, इसमें एक परमपिता परमात्मा की स्तुति का विधान परमात्मा से भिन्न स्तुति पूजा का निषेध है।

आज विश्व के कई धर्माचार्य मनो वैज्ञानिक, धर्माचार्यों द्वारा किया है इस सत्य को स्वीकार कर चुके हैं कि ओउम् नाम से शान्ति, ध्यान व ईश्वर के प्रति सुवृत्ति होती है।

इसलिए हम भक्ति में केवल उस परमात्मा की स्तुति ही करें, उसे ही श्रद्धा सुमन अर्पित करें। इस सत्य को अनेक धर्म ग्रन्थ, मजहब पुस्तकों ने भी स्वीकारा है, **एक साधे सब सधे** वाली कहावत सत्य है।

सन्त कबीर ने लिखा –

जो मन लागे एक सो, तो निरवारा जाय।
तूरा दो मुख बाजता, घना तमाचा खाय।।

अर्थात् – इधर उधर मन भटकाने से लाभ नहीं अपितु एक के प्रति श्रद्धा से ही हमारा उद्धार है, हमारी भक्ति भी तभी स्वीकार्य होगी।

अभिमान से दूरी

यदा किंचिज्ज्ञोऽहं द्विप इव मदान्धः समभवम्
तदा सर्वज्ञोऽस्मीत्यभवदवलिप्तं मम मनः।
यदा किंचित्किचिंद् बुधजनसकाशादवगतम्
तदा मूर्खोऽस्मीति ज्वर इव मदो मे व्यपगतः।।

भावार्थ – जब मुझे कुछ ज्ञान हुआ तो मैं हाथी के समान मदान्ध होकर अपने मन में ज्ञानी होने का गर्व करने लगा और समझने लगा कि मैं सर्वज्ञ हूँ। मेरे जैसा कोई नहीं, लेकिन जब मैं विद्व समाज से, ज्ञानी जनों से, सद् संगति से कुछ–कुछ प्राप्त कर सका या जब मुझे यथार्थ का ज्ञान हुआ, तब मेरा वह मद ज्वर के समान उतर गया और मैंने जाना कि मैं तो निपट मूर्ख हूँ।

www.thearyasamaj.org

स्वामी दयानन्द

पूर्णता और प्राचीनता के विचार से शास्त्रों में वेद का स्थान सर्वोपरि है। इसी तरह धर्म और सभ्यता के विचार से भारत की आर्य जाति का स्थान बहुत ऊंचा था किन्तु मनुष्य प्रमाद, आलस्य या अपने अज्ञान के कारण धर्म से दूर चले जाते हैं। जब पाखण्ड या कपोल कल्पित मत चलाने वाले स्वार्थियों के जाल में फंसकर धर्म को अधर्म मानने लग जाते हैं, तब संसार में दुःख और अशान्ति का ही साम्राज्य फैल जाता है, जैसा इस समय देखने में आ रहा है। अनुमान पांच हजार वर्ष पहले भी जिस समय श्रीकृष्ण का जन्म हुआ, अत्याचारी और अभिमानी राजाओं के कारण धर्म में कुछ ग्लानि आ गई थी, उस समय उन्होंने अत्याचारियों का नाश करते हुए वेदों का सार श्रीभगवद्गीता के रूप में प्रकट किया था। उससे ढ़ाई हजार वर्ष पश्चात फिर अज्ञान जन्य अंधभक्ति और विलासिता में फंसकर लोग पापाचार करने लग गये। तब भगवान बुद्धदेव ने सच्चे आर्य धर्म का प्रचार करने के लिये अंधभक्ति और विलासिता को दूर करने के लिये, विशेष प्रकार से अहिंसा, वैराग्य और प्रेम का उपदेश देते हुए लोगों को सन्मार्ग में लगाया था। उस समय तक भारतवर्ष तथा अन्य अधिकांश देशों में आर्य धर्म को ही मानने वाले रहते थे। भारत से ही आध्यात्मिक ज्ञान का स्त्रोत बहता रहता था। दूसरे देशों पर भी यहां की धार्मिक बातों का प्रभाव पड़ता था। इसलिये यहां पर अन्य देशों में भी एक प्रकार की नई लहर फैल जाती थी, जैसे भगवान बुद्ध के पश्चात भारत से बाहर अन्य देशों में भी उनके उप देश शीघ्रता से फैल गये।

भगवान श्रीकृष्ण और बुद्ध के समय की स्थिति भिन्न थी, इसलिये बुद्ध के उपदेश भी कुछ अंशों में भिन्न थे, किन्तु उन्होंने, आय सत्य बोलकर ही प्राकृत भाषा में उसी प्राचीन आर्य धर्म का प्रचार किया था। भगवान बुद्ध के पीछे अनुमान एक सहस्त्र वर्ष तक लोगों ने पर्याप्त सांसारिक और धार्मिक उन्नति की, किन्तु अति दया और अति वैराग्य की भावना बढ़ने से यहां का क्षात्र तेज लुप्त होता गया और भारत से बाहर दो नये पंथ उत्पन्न होने तथा किसी तरह उनका प्रभाव अनेक देशों में पड़ने से स्थिति पलटती गई। वर्तमान समय की संसार की स्थिति बहुत पलट गई हैं। सर्व धर्म की चर्चा नहीं के तुल्य रह गई है। भगवान कृष्ण और बुद्ध के समय से भारतवर्ष बहुत अधोगति को चला गया है। बुद्ध के समय में देश बहुत सम्पन्न था, इसलिये भगवान बुद्ध ने लोगों को मोक्ष निर्वाण (जन्म–मरण, जरा–व्याधि के दुःखों से सदा के लिये छुटने) का ही उपदेश दिया था। ब्रह्म विद्या के दान से बढ़कर कोई दान नहीं, तब भी उस उपदेश के सभी अधिकारी नहीं होते, और इस समय तो लोगों को रोटी की इतनी चिन्ता है कि सबकुछ रोटी को ही समझने लग गये हैं। यद्यपि रोटी ही सबकुछ नहीं है, किन्तु "भूखे भक्ति न होई गोपाला" वाली बात हो रही है। इन सब परिस्थितियों विचारते हुए स्वामी दयानन्द ने पाखण्ड और अविद्या के नाश के लिये तथा इहलोक और परलोक की उन्नति के लिये वैदिक धर्म के आधार पर आर्य समाजों की स्थापना की थी। धर्म की ग्लानि को मिटाने के लिये और आर्य हिन्दू जाति को फिर से उन्नत करके संसार में धर्म का डंका बजाने के लिये आर्य समाज की स्थापना हुई है। "यतो धर्मस्ततो जयः" यदि आर्य लोग उत्साह और सच्चाई से धर्म की लगन से काम करते जाये, तो निःसन्देह भारत में और संसार में सुख, शान्ति तथा धर्म के राज्य की स्थापना होगी। स्मरण रखना चाहिये कि आर्य समाज का उत्तरदायित्व बहुत बड़ा है। यद्यपि अब तक आर्य समाज ने जो कुछ सेवा की है, वह अच्छी है किन्तु जो गुरूतर कार्य हमें करना है वह बहुत बड़ा हैं। इसलिये इस अर्द्ध शताब्दि के अवसर से लाभ उठाकर हमें कोई बड़ी योजना तैयार करनी चाहये और लोगों को, विशेष त्याग की प्रतिज्ञा करते हुए, परमात्मा के भरोसे कार्य में जुट जाना चाहिये।

— जुगलकिशोर बिड़ना, कलकत्ता

www.thearyasamaj.org

बाल सन्देश स्तंभ

ईश्वर

प्र. 1 "पूज्यनीय प्रभो हमारे" यज्ञ की प्रार्थना को किसने लिखा है ?

प्र. 2 संध्या में मनसा परिक्रमा के कितने मन्त्र हैं ?

प्र. 3 शान्ति पाठ का मन्त्र किस वेद से लिया गया है ?

प्र. 4 संध्या में उपस्थान के कुल कितने मन्त्र हैं ?

प्र. 5 ईश्वर का अस्तित्व कितनी देर रहता है ?

प्र. 6 हम ईश्वर की प्रार्थना क्यों करते हैं ?

प्र. 7 ईश्वर को हम देख क्यों नहीं सकते ?

प्र. 8 ईश्वर के अनन्त नाम किस आधार पर हैं ?

प्र. 9 संसार को बनाने वाला कौन है ?

प्र.10 ईश्वर का निज नाम क्या है ?

उत्तर – 1. लोकनाथ तर्क वाचस्पति 2. 6 3. यजुर्वेद
4. 4 5. सर्वदा 6. मन और बुद्धि पवित्र हो
7. वह निराकार है 8. गुणों का आधार
9. ईश्वर 10. ओ3म्

Remember Allwage

Five golden principal of life :

सदा याद रखें : जीवन के 5 स्वर्णिम सिद्धान्त

1- Vedas are the Repertoire of knowledge
वेद ज्ञान का भण्डार हैं।

2. Vedas are the divine massage of God.
वेद परमात्मा का पवित्र सन्देश हैं।

3. Vedas are the very first knowledge of the world.
वेद संसार का प्रथम ज्ञान है।

4- Vedas are the complete knowledge of the world.
वेद संसार का पूर्ण ज्ञान है।

5. Vedas are the very first knowledge of Humanity.
वेद मनुष्यता का ज्ञान है।

www.thearyasamaj.org

जिन्दगी

जिन्दगी का बड़ा अजीब हाल है,
हर पल उठता इस पर सवाल है।
जिन्दगी के रंग बड़े निराले हैं,
कहीं अमृत तो कहीं जहर के प्याले हैं।

गिरना, उठना फिर चलना,
जिन्दगी की निशानी है।
हर कदम पर बदलाव,
कहीं खुशी तो कहीं परेशानी है।

कभी समतल सपाट जमीन तो कहीं,
ऊंच–नींच पहाड़ी सी बनी है।
कहीं विरान जंगल तो,
कहीं घनघोर जंगलों सी बनी है।

कहीं कांटें ही कांटें हैं,
तो कहीं फूल खिलते हैं।
कहीं जनम–जनम की दूरी,
तो कहीं बिछड़े हुए मिलते हैं।

कभी चिलचिलाती मांध सी धूप भी है,
तो कहीं सावन सी हरियाली ।
कहीं चट्टानी रास्ता पड़ता है
तो कहीं पर जगह है खाली ।।

www.thearyasamaj.org

कभी सूखा जिन्दगी से खेलता,
तो कहीं कहर होता पानी का।
कहीं बुढ़ापा बना अभिशॉप,
कहीं दुःख जवानी का ।।

पर ये सब जीवन की धूप–छांव है,
जो आती और जाती है।
कभी अपार खुशी मिली,
तो कभी वो तरसाती है।

पर हर हाल में जिन्दगी का,
अस्तित्व कायम रहता है।
कमजोर न समझ इनसे,
नाहक डरता है।

चलते रहना, बढ़ते रहना,
जिन्दगी का है दस्तूर।
जो बैठ गया थककर,
वो रहा मंजिल से दूर है।।

इसलिए हर हाल में जीवन जीना,
बाधाऐं कुचल बढ़ते रहना,
जीवन की सफलता है।
हौंसले बुलन्द हो जिसके,
उसे कौन रोक सकता है।।

— प्रकाश आर्य, महू

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

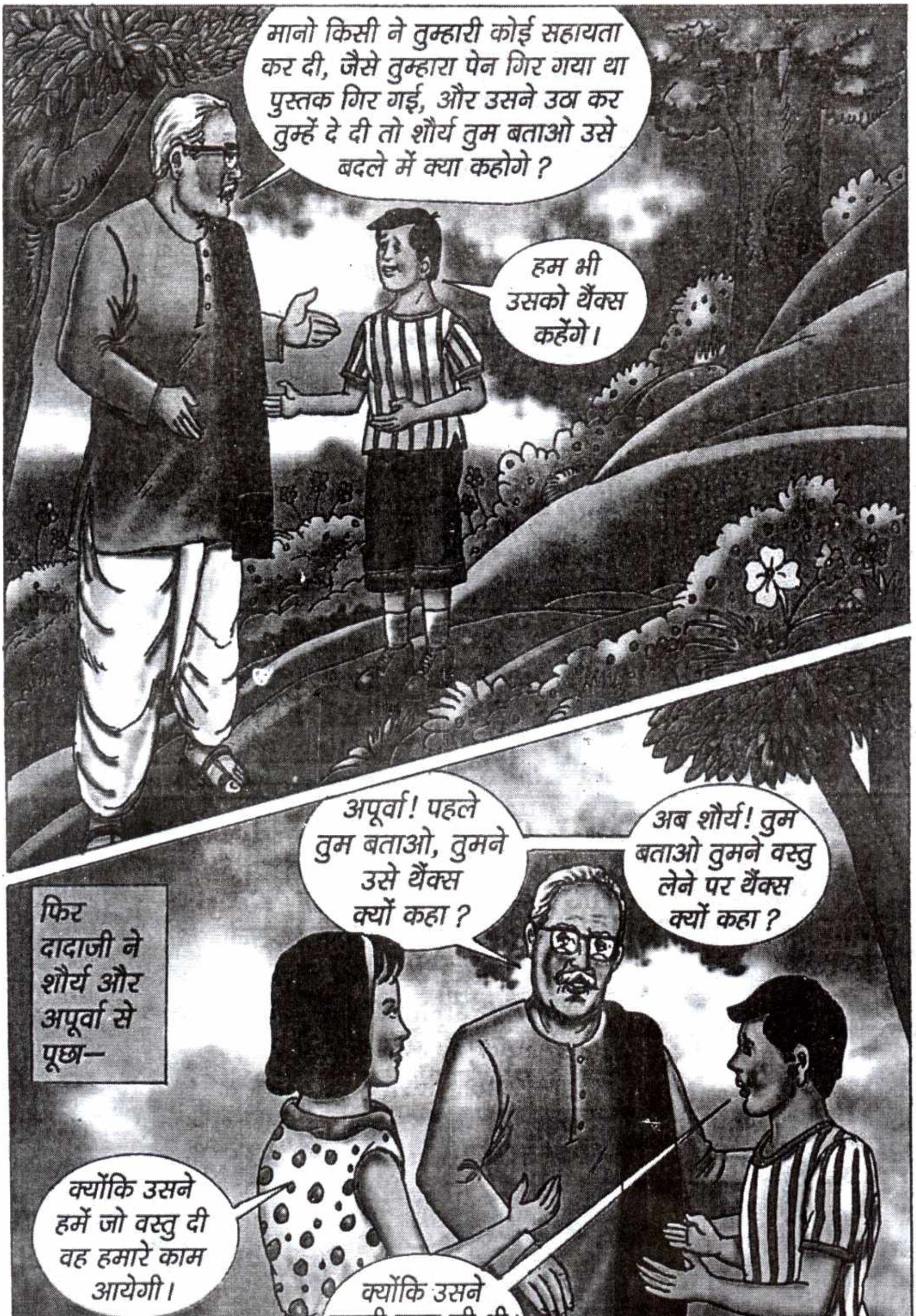

www.thearyasamaj.org

www.thearyasamaj.org

समाचार –

दक्षिण अफ्रिका में आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के तत्वावधान में विगत वर्ष 2006 से अभी तक 7 आर्य महासम्मेलन सम्पन्न हो चुके हैं।

दिल्ली सम्मेलन में की गई घोषणा के अनुसार – दिनांक 28 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक दक्षिण अफ्रिका के डरबन में यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में अनेक देशों के प्रतिनिधि भाग लेने पहुंचे थे।

भारत से लगभग 140 आर्यजनों ने सम्मेलन में भाग लिया। सार्वदेशिक सभा के प्रधान आचार्य बलदेवजी, मन्त्री (मैं प्रकाश आर्य), श्री राजसिंह आर्य (प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली), श्री वाचोनिधि आर्य (उपमन्त्री सार्वदेशिक सभा), श्री विनय आर्य (महामन्त्री दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा), श्री धर्मपाल आर्य (उपप्रधान दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) आदि तथा महू से श्री राधेश्याम बियाणी एवं श्रीमती गीता आर्य भी गए थे।

अनेक विषयों पर विद्वान वक्ताओं ने उद्बोधन दिया। विशेषकर डरबन के नवयुवकों द्वारा वेद को साईन्स के साथ जोड़ते हुए एक अत्यन्त प्रभावशाली, सार्थक और वेदज्ञान की पुष्टि करते हुए गोष्ठी की। इससे वेद में विज्ञान है, इसका प्रतिपादन किया गया, यह अत्यन्त सराहनीय कार्यक्रम था।

नशामुक्ति तथा जीवनोपयोगी बातों को लेकर एक शोभायात्रा निकाली गई। यह डरबन से दूर फेनिक्स पर आयोजित की गई थी। यहां पर एक साथ 200 हवन कुण्डों के द्वारा सामुहिक यज्ञ किया गया। सनातन धर्मी सभी हिन्दू संगठनों ने इस सम्मेलन में भाग लिया तथा वेद का समर्थन कर सहयोग का आश्वासन दिया। आर्य समाज व वेद प्रचार की नई योजना दक्षिण अफ्रिका समाज द्वारा बनाई गई जिसमें उपदेशकों के प्रशिक्षण का भी लक्ष्य है।

इस अवसर पर विदेशों से आने वालों का प्रधाना श्रीमती उषा देसाई तथा मन्त्री श्री रामविलास जी द्वारा एयरपोर्ट पर ही सबका भावभीना स्वागत किया। भोजन, ठहराने की व्यवस्था कार्यक्रम स्थल पर ही थी, व्यवस्था अत्यन्त सराहनीय थी। वहां का प्रत्येक सदस्य सेवा भाव से अतिथि सत्कार में लगा हुआ था। समापन के समय सभी आगन्तुकों को प्रतीक चिन्ह प्रदान कर स्वागत किया गया।

भारत से 8000 कि.मी. दूर महर्षि के मिशन के प्रति जो जागृति, उत्साह, संयम, समर्पण, संगठन देखने को मिला वह अकथनीय है। वहां भाषण के स्थान पर कर्म को अधिक महत्व दिया जा रहा है, छोटे–छोटे

www.thearyasamaj.org

बालक व नवयुवक, महिलाएं बड़ी संख्या में जुड़े हैं, यह देखकर अच्छी अनुभूति हुई।

यात्रा भी सुखद रही, यात्रा में अनेक विद्वान, आचार्य, शास्त्री, सन्यासी, गायक थे, इसलिए सार्थक भी रही।

परमात्मा की कृपा से सभी सकुशल स्वस्थ अपने वतन लौंटे, इस हेतु उसका कोटिशः धन्यवाद। इत्योम्

प्रकाश आर्य

मन्त्री

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

उज्जैन–भोपाल संभाग में वेद प्रचार

उज्जैन। संभागीय उप प्रधान श्री लक्ष्मीनारायण आर्य के मार्गदर्शन में .... ग्रामों में निरन्तर विद्वानों को आमन्त्रित कर वेद प्रचार करवाया ला रहा है।

भोपाल। संभागीय उप प्रधान श्री राममुनिजी व ओमप्रकाश आर्य के प्रयास से .... में प्रचार कार्य हुआ।

उज्जैन संभाग में कार्यक्रम सम्पन्न

खरसौद कलॉ। वैदिक यज्ञ समिति के तत्वावधान में गायत्री महायज्ञ, सत्संग, भजन, प्रवचन का भव्य आयोजन दिनांक 16 दिसम्बर 2013 से 20 दिसम्बर 2013 तक आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में आमन्त्रित विद्वतगण – सुश्री अंजली आर्या (भजनोपदेशिका), करनाल, श्री प्रकाश आर्य, महू (महामन्त्री–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं मध्यभारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा), पं. कुलदीप जी आर्य (भजनोपदेशक) बिजनौर, पं. राजेन्द्रजी व्यास, उज्जैन (पूर्व मन्त्री–म.भा.आर्य प्र. स. भोपाल), पं. सतपाल आर्य (युवा भजनोपदेश) बेहरी।

रतलाम संभाग में कार्यकर्ता सम्मेलन

संभागीय उपप्रधान श्री भगवानदासजी अग्रवाल व उपमन्त्री श्री मनोज स्वर्णकार तथा श्री बंशीलाल शर्मा .... द्वारा योजनाबद्ध तरीके से समाजों से सम्पर्क व प्रचार योजना बनाई जा रही है। दिनांक 15/12/13 को संभागीय कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया गया है।

www.thearyasamaj.org

सामाजिक उन्नति के साधन
संगठन सूक्त

ओं सं समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ ।
इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्या भर ।। १।।

अर्थ - हे प्रभो ! तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें है कीजिए धन वृष्टि को ।

सं गच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम् ।
देवा भागं यथा पूर्वे सं जानाना उपासते ।। २।।

अर्थ - प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो,
पूर्वजों की भाँति तुम कर्तव्य के मानी बनो ।

समानो मंत्रः समितिः समानी-समानं मनः सह चित्तमेषाम्
समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि ।। ३।।

अर्थ - हों विचार समान सबके चित्त मन सब एक हो ।
ज्ञान देता हूँ बराबर भोग्य पा सब नेक हो ।

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः ।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सुहासति ।। ४।।

अर्थ - हो सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा,
मन भरे हो प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा ।

महामृत्युञ्जय मन्त्र :

ओ३म् त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्मुक्षीय मामृतात् ।।

शांतिमंत्र

ओं द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शन्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्ति शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ।।

www.thearyasamaj.org
एम.पी.एच.आई.एन. 2003 12367

पंजीयन संख्या म.प्र./भोपाल/32/2012-14

वैदिक रवि के उद्देश्य व नियम

1. वैदिक रवि मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा का आमुख पात्र है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इसका प्रमुख उद्देश्य है।
2. यह पत्रिका माह की 27 तारीख को प्रकाशित होती है।
3. आगामी माह की 05 तारीख तक पत्रिका यदि पाठकों तक न पहुंचे तो डाक विभाग द्वारा या कार्यालय से पत्रिका के संबंध में जानकारी प्राप्त करें।
4. पत्रिका का मूल्य 20 रुपये प्रत्येक प्रति, वार्षिक सदस्यता शुल्क 200 रु. एवं आजीवन सदस्यता शुल्क 1000 रु है। आजीवन सदस्यता का तात्पर्य 15 वर्ष की अवधि तक के लिए सदस्यता से है।
5. सदस्यता शुल्क के ड्राफ्ट, चेक, मनीआर्डर आदि 'मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम भोपाल में देय होने चाहिए।
6. पत्रिका में छपवाने हेतु भेजे गये लेख, कवितायें आदि माह की 10 तारीख तक कार्यालय में पहुंच जाने चाहिए उसके बाद प्राप्त होने वाले लेख पत्रिका के विचारार्थ होंगे। विशेष पर्व हेतु भेजे लेख एक माह पूर्व भेजने का कष्ट करें। पत्रिका हेतु भेजे गये लेख साफ एवं स्वच्छ लिपि में कागज पर एक ही ओर लिखे हों यदि टंकित लेख हों तो ज्यादा अच्छा होगा।
7. पत्रिका में आर्य समाज तथा उसकी विचारधारा से संबंधित समाचार, सामाजिक, आध्यात्मिक, राष्ट्रीय हित के लेख, समालोचनात्मक निबंध आदि विषयों की सामग्री ही प्रकाशित की जाती है। चमत्कार, पाखण्ड युक्त लेख सामग्री स्वीकार्य नहीं होती।
8. पत्रिका हेतु भेजे गए लेख आदि को संपादित कर लघुकृत करने, छापने अथवा न छापने के सर्वाधिकार संपादक के है इस संबध में कोई पत्राचार स्वीकार नहीं होगा।
9. पत्रिका में छपे लेखों के लेखकों को उनके दिये हुए पते पर पत्रिका का वह अंक जिसमें लेख छपा है नि:शुल्क भेजा जाता है। अप्राप्त होने पर वैदिक रवि कार्यालय या डाक विभाग से सम्पर्क करें।
10. पत्रिका की गुणवत्ता में सुधार एवं विकास हेतु आपके सुझाव सदैव आमंत्रित हैं।

प्रधान संपादक
वैदिक रवि
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
टी.टी. नगर, भोपाल (म.प्र.) 462003

मुद्रक, प्रकाशक, इन्द्र प्रकाश गांधी द्वारा कौशल आफॅसेट प्रेस, तलैया से मुद्रित कराकर मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा कार्यालय, तात्या टोपे नगर, भोपाल से प्रकाशित। संपादक प्रकाश आर्य

प्रति,

अवितरित रहने पर कृपया निम्न पते पर लौटायें
मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा
तात्या टोपे नगर, भोपाल 462003 (म.प्र.)